

उ

1. उ interj. gaṇa चादि zu P. 1, 4, 57. geht mit einem folgenden Vocal keine euph. Veränderung ein 1, 1, 14, Sch. Vor. 2, 19 (उ उमेशः). उ मेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां समुखी जगाम Kumāras. 1, 26. Die Lexicographen geben folgende Bedd. an: रोषोक्त्यामन्त्रणयोः H. an. 7, 3. संबोधनरोषोक्त्यानुकम्पानियोगयोः ॥ पदपूर्णे च पादपूर्णे ऽपि च दृश्यते। Msd. avj. 4, 5.

2. उ enklit. copula; zugleich einen leichten Gegensatz einschließend. Am häufigsten nach pronomm., praep., Partikeln und gern vor नु und सु gebraucht; überhaupt in vielfacher Verbindung mit andern kräftigern Partikeln zu finden, unter deren Bedeutung die von उ leicht verschwindet. Nir. 1, 5, 9. 1) einfach verbindend: und, auch, ferner: सदृशीर्य सदृशीरिडु सः RV. 4, 123, 8. अचेति दक्षा व्युः नक्तम्पवयः 139, 4. रघुद्रुवेः कृष्णसीतास उ जुवः 140, 4, 11. 143, 7. 154, 4. 156, 1, 2. स्त्रियः सतीस्तां उ मे पुंस आहुः 164, 16. ये अर्वास्तौ उ पराच आहुः 19, 26. इदं त एकां पर उ त एकम् 10, 56, 1. तदास्त्रावस्य भेषजं तदु रोगमनीन-शत् AV. 2, 3, 3. 9, 2. 26, 3. स देवान्यन्तस उ कल्पयाद्विशः 3, 4, 6. 21, 4, 6, 11, 3. 7, 5, 2. स एवाय स उ सः Kaṭh. 4, 13. शते श्रुत्सु नो पुरा AV. 18, 2, 38. Ait. Br. 3, 28, 30. 7, 34, 8, 22, 23. वेत्य यथेमाः प्रजाः प्रपत्यो वि-प्रतिपयन्ता इ इति नेति कोवाच वेत्यो यथेमं लोकं पुनरापयन्त इ इति नेति कोवाच वेत्यो u. s. w. Bṛh. Ār. Up. 6, 2, 2. यद्यपि दश रात्रीर्नाम्नीयाय्यु कृ जीवित् Kṛh. Up. 7, 9, 1. Mit andern Verbindungswörtern: अथो (vgl. u. अथ 7, a) RV. 10, 83, 35. आहुं छेनमथो अहिं यातुधानमथो वृकम् AV. 4, 3, 4. 1, 14, 2. 22, 2. 2, 4, 6. Çat. Br. 2, 3, 16. 3, 1, 1, 20. आहुं RV. 8, 82, 15. आहु नु ते अनु क्रतुम् 52, 5. AV. 5, 13, 2, 3. उतो und उत्त उ RV. 9, 21, 7. उतो न्वेस्य यत्पदम् 8, 16, 18, 6. उतो घा ते पुरुष्या इरासन् 7, 29, 4. AV. 4, 16, 3. 19, 1. 10, 7, 21. — 2) zur Hervorhebung dienend, ähnlich dem Gebrauch von इदः; besonders nach praep., demonstrat., bei वै, हि, चिद् und andern: उडु प्य देवः संविता सवायं (अस्यात्) RV. 2, 38, 1. 1, 50, 1. 6, 51, 1. 71, 5. तपो षष्ठे अक्षरौ अमित्रान् 3, 18, 2. न वा उ देवा नु-धमिदधं दडः 10, 117, 1. उयो हरुचे युवतिर्न योषी 7, 77, 1. 1, 124, 4. 9, 61, 13. न्यु प्रिया मनुषः सादि कोता 7, 73, 2. 4, 53, 1. ओ हि वर्तते 10, 117, 5. 10, 1. आतं कृविरो धिन्द्र प्र वीहि 179, 2. प्रो अयासीदिन्द्रु रिन्द्रस्य 9, 86,

16, 89, 1. 6, 37, 2. 8, 51, 1. 10, 133, 1. अयम् वा पुरुतमो जोरुवोमि 3, 62, 2. 8, 17, 7. 1, 136, 3. इदम् त्यत्पुरुतमं पुरस्ताज्योतिरुदेस्वात् 4, 51, 1. 3, 9. AV. 1, 24, 4. तासामु Taitt. Up. 1, 3, 1. तदेतदन्तरं ब्रह्म स प्राणस्तडु वाञ्छनः । तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेदव्यं सोम्य विद्धि Mūṣp. Up. 2, 2, 2. Kaṭh. 1, 14, 4, 9. Īçop. 3. Kṛh. Up. 7, 4, 1. 8, 7, 4. एक्षु पु ब्रवाणि ते RV. 6, 16, 16. महीमू पु मातरं ऊवेम VS. 21, 5. न वा उ योपद्रुद्रादसुर्यम् RV. 2, 33, 9. इ-मिद्धा उ भेषजम् AV. 6, 57, 1. 4, 36, 10. एवमुपासितव्यम् एवमु चैनडुपास्यम् Taitt. Up. 1, 11, 4. यो नः पाप्मन्नं ब्रह्मास्ति तमु त्वा ब्रह्मो व्यम् AV. 6, 26, 2. 83, 1. यद्यत्तरिज्ञातस उ वायुरेव 124, 2. Kenop. 2. — 3) besond. Erwähnung verdient der Gebrauch von उ a) in der Redefigur der Epanaphora beim ersten Gliede und in einem vorangehenden Relativsatze: तमु स्तुपु इन्द्रं तं गृणीषे RV. 2, 20, 4. यतं उ आयततुदेयोराविशम् 24, 6. यमु पूर्वमा-ऊवे तमिदं ऊवे 37, 2. यडु क ज्ञानश्रुतिः पौत्रायणा उपश्रुत्वा Kṛh. Up. 4, 1, 5. प्रो अश्चिन्नाववसे कृणुधं प्र पूषणम् RV. 4, 186, 10. 2, 8, 3. पर्यं पु प्र धेन्व वाजसातये परं वृत्राणि सताणिः 9, 110, 1. घाप इहा उ भेषजीर्या अ-मोवचातनीः 10, 137, 6. — b) in Folgerungssätzen: nun: अयू नु पत्नीर्वप-णो जगम्युः RV. 4, 179, 1. Ait. Br. 6, 8. एतडु कैताभिस्त्रयमुपाप्नाति 10. य-डुक्चिन्यो ऽन्या कोत्रा अनुकथा अन्यास्तेनो विपमा एवमु हास्येता उक्चि-न्यः सर्वा समा समृद्धा भवन्ति 13. Çat. Br. 1, 3, 1, 23, 25. पञ्चैतदग्ने रेत-स्तेन न्वेव श्रुतं यदेनद्रावधिश्रयति तेनो एव श्रुतम् 2, 3, 1, 15. देवमृष्टो वा एषेष्टिः 5, 2, 1, 9. तडु तथा न कुर्यात् 2, 3. — c) in Fragesätzen: किमु अ-छः किं यक्छि आ जगन् RV. 4, 161, 1. क उ तच्चिकेत 164, 48. कडु प्रे-ष्ठविषो रयीणाम् 181, 1. 5, 48, 1. 8, 3, 14. कहु न्वेस्याकृतमिन्द्रस्यास्ति पौष्यम् । केतो नु कं श्रोमतेन न शृणुवे 33, 9, 10. 10, 29, 4. किनुं धिदस्मै निर्विदो भनत 4, 18, 7. किमू नु वः कृणवामापरैण किं संनेन वसव आच्येन 2, 29, 3. 4, 21, 9. Çat. Br. 1, 6, 1, 4. AV. 7, 56, 8. Ait. Br. 2, 39. कम्वर ए-नमेतत्सत्तं सयुगवानमिव रैक्षमात्य Kṛh. Up. 4, 1, 3. कथं नु तद्विज्ञानीयो किमु भाति विभाति वा Kaṭh. 5, 14. Vgl. 7. — 4) dagegen, in Verb. mit einem relat.: यदि नाभाति पितृदेवत्यो भवति यद्यु अभाति देवानत्यभाति Çat. Br. 1, 1, 1, 9. अन्धच्छेया ऽन्यडुतैव प्रयस्ते उभे नानार्थे पुरुषे सिनीतः । तयोः श्रेय आददानस्य साधु भवति कीयते ऽर्थाय उ प्रेयो वृषाति Kaṭh. 2, 1. अन्धं तमः प्र विशति ये ऽविद्यामुपासते । ततो भूय इव ते तमो य उ